राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय : एक नज़र

संसद द्वारा पारित केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के तहत स्थापना की गयी है। वर्तमान में 20 विभाग संचालित हैं। सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (समान प्रवेश परीक्षा CUCET) के माध्यम से प्रवेश दिये जाते हैं। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों का प्रारूपण ज्ञानोत्पादक एवं रोजगारोन्मुख है एवं पाठ्यक्रमों की संरचना अनुसंधानात्मक, प्रयोगात्मक तथा छात्रहित केन्द्रित रखने का प्रयास किया गया है। छात्र अध्यापन, अनुसंधान तथा अंतरअनुशासनिक पाठ्यक्रमों के चयन हेतु स्वतंत्र है।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं भारतीय सूचना क्रांति के पुरोधा एवं प्रधानमंत्री के सार्वजनिक सूचना, नवाचार और नवरचना मामलों के विशेष सलाहकार श्री सैम पैत्रोदा कुलाधिपति हैं प्रोफ़ेसर एम. एम. सालुंखे विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति हैं और वर्तमान में प्रोफ़ेसर ए. पी. सिंह कार्यकारी कुलपति हैं

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय भारत के श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक बनने को प्रतिबद्ध है जो गतिशील समन्वित विकास जीवंत और बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य के हिसाब से अद्वितीय शैक्षिक अवसर प्रदान करता है। खासकर उन शिक्षार्थी समुदाय हेतु जो समाज के निचले सामाजिक स्तर से आते हैं परन्तु जिनकी जिज्ञासा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की होती है। यह अभिनव स्नातक और स्नातकोत्तर अकादमिक **कार्यक्रमों एवं सतत वैयक्तिक एवं पेशेवर संवर्द्धन द्वारा चयनित क्षेत्रों में एक बुद्धिजीवी वर्ग तैयार करेगा जो ज्ञान का साझा उच्च स्तरीय स्वरूप और विकसित करने हेतु कार्य करेगा जो विचारशील रचनात्मक संवेदनशील व जिम्मेदार नागरिक प्रदान करेगा ।** राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय का मिशन उदार शिक्षा दृष्टि पर आधारित स्नातक और स्नातकोत्तर रोजगारपरक व्यावसायिक एवं डॉक्टरेट उपाधि के श्रेष्ठतम और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना है जिसके माध्यम से राज्य के तथा व्यापक अर्थों में देश के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य एवं सामाजिक विकास में प्रतिबद्ध संकल्प के साथ योगदान करना है। विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- छात्रों के चारित्रिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ उनकी विश्लेषणात्मक सोच व्यक्तिगत पहल और जिम्मेदारी की भावना विकसित करके उनका उज्ज्वल भविष्य बनाना।
- नवोन्मेशी तथा लचीले शोध कार्यक्रम उपलब्ध कराना तथा शिक्षार्थियों के व्यापक दायरे एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं के प्रति सजग संरचनाओं को समर्थन देना।
- स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोध कार्यक्रमों में संलग्न विद्यार्थियों को शिक्षण की विस्तृत श्रृंखला और अवसर उपलब्ध करवाना।
- स्थानीय प्रदेशीय राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मामलों पर संकाय-सदस्यों और छात्रों के बीच विचारशील दायित्वपूर्ण तथा सहभागितापूर्ण आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देना।
- समाज के अल्पसंख्यक तथा निम्न आर्थिक सामाजिक समुदायों से आने वाले विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए विशेष वचनबद्धता स्वीकार करना।
- राज्य के समक्ष आ रही चुनौतियों से संबंधित शोध कराना एवं सामुदायिक हितों के लिए अपनी विशेषज्ञता द्वारा सहयोग करना।
- नेतृत्व क्षमता विकसित करने के साधन उपलब्ध कराना, तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों, परिसर की गतिविधियों के जरिये सेवा प्रदान करना एवं सामुदायिक सहभागिता के लिए अवसर प्रदान करवाना।

- ऐसा शैक्षणिक परिवेश उपलब्ध कराना जो सर्वसुलभ और अधिगम्य उच्चमूल्यों और गुणवत्तापूर्ण हो जो छात्रों की विद्वत्ता व पेशेवर कौशलों, नैतिक सिद्धांतों, वैश्विक परिप्रेक्ष्य सुदृढ़ एवं परिपुष्ट कर सके।
- संकाय-सदस्यों और छात्रों के प्राथमिक एवं क्षेत्रीय अनुसंधानों को सशक्तता प्रदान करना।
- शिक्षण शोध अभिविस्तार तथा कंसल्टेंसी द्वारा हमारे चहुँमुखी मिशन के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यों को एकीकृत करना है।
- अंतःसंकायी शैक्षणिक संसाधनों के निर्माण हेतु ज्ञान की खोज करना, जिससे कि विश्वविद्यालय शोध प्रतिबद्धता के क्षेत्र में अनिवार्यतः अग्रणी विश्वविद्यालय बने तथा यह अर्जित ज्ञान व तकनीकी समुदायों की क्षमता संवर्द्धन हेतु निरन्तर हस्तांतरित करते रहना एवं भारत की प्रतिस्पर्द्धात्मक शक्ति और बौद्धिक कौशल को वैश्विक स्तर पर प्रौन्नत करना।
- कुशलता पारदर्शिता तथा जवाबदेही आधारित उच्च गुणवत्ता युक्त विश्वविद्यालय प्रशासन संचालन हेतु प्रोएक्टिव प्रबंधन रणनीति बनाना।
- ऐसे विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करना जो विश्व में सर्वाधिक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करे बौद्धिक कौशल तथा सकारात्मक मनःस्थिति विकसित करने में एवं निरन्तर बढ़ते हुए प्रतिस्पर्द्धात्मक अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो साथ ही साथ मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से देश के जिम्मेदार नागरिक बना सकें।

हिंदी विभाग : प्रगति के पथ पर, अग्रसर निरन्तर

मानविकी और भाषा स्कूल, हिन्दी विभाग : प्रगति के पथ पर, अग्रसर निरन्तर है। राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय इस तरह का पहला स्नातकोत्तर कार्यक्रम लाया है जो एक एकीकृत एवं विभिन्न व्यावसायिक कौशलों को विकसित करने पर बल दे रहा है हिंदी विभाग का पाठ्यक्रम साहित्य और भाषा विज्ञान के एकीकृत अध्ययन पर केन्द्रित है जो छात्र नौकरी खोजने के लिए सक्षम होंगे या उच्च अंतरविषयक अध्ययन/अनुसंधान के लिए जा पायेंगे। वर्तमान पाठ्यक्रम भाषा के रोजगारपरक संचार संबंधी पहलुओं को उजागर करने की कोशिश करता है। लगभग दो दशकों में बड़े पैमाने पर भाषा से जुड़े रोजगार एवं नौकरी जैसे- अनुवादकों और हिंदी अधिकारी, समाचार पत्र और टेलीविजन चैनलों में अधिक से अधिक रोजगार के अवसर होने के बावजूद भी भाषा के प्रयोग की गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ है।

शिक्षा की नई नीतियाँ उच्च शिक्षा के व्यावसायीकरण पर बल दे रहे हैं। नतीजतन, प्रयोजनमूलक हिंदी, रोजगार-सृजक हिन्दी आदि कई पाठ्यक्रमों को कई विश्वविद्यालयों द्वारा शुरू किया गया है, लेकिन छात्रों के बीच ये उस रूप में लोकप्रिय नहीं हुए हैं जिस रूप में उन्हें होना चाहिए। किंतु, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्ययनरत और उत्तीर्ण हो चुके विद्यार्थियों ने अपनी लगन और मेहनत से एक नयी ऊर्जा का संचार किया है। यह स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम अपने उद्देश्यों के साथ कई क्षेत्रों को समाहित करता है। हिन्दी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देश्य हिंदी विभाग की स्थापना अकादमिक सत्र- में की गयी जिसमें स्नातकोत्तर एवं पी-एच. डी. पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है। **विभाग की स्थापना और विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :**

1) अंतर-अनुशासनिक विस्तार और तुलनात्मक साहित्य की प्रवृतियों तथा आंदोलनों और समकालीन साहित्यिक विधाओं का ज्ञान प्रदान करना।

2) छात्रों को तुलनात्मक साहित्य और सांस्कृतिक अध्ययन हिन्दी भाषा के अध्यापन में शैक्षिक कैरियर, प्रकाशन, रंगमंच रेडियो टेलीविज़न और फिल्म लेखन एवं उत्पादन, विज्ञापन और कॉरपोरेट-संचार क्रियात्मक-कला, अनुवाद-अध्ययन, व्याख्या एवं पत्रकारिता के क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना ।रिची
3) उपर्युक्त क्षेत्रों में विशेषज्ञता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना ।
4) रचनात्मक और पेशेवर लेखन में कैरियर बनाना, जनसंचार भाषा सांस्कृतिक अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य और अन्य क्षेत्रों में अंतर विषयक क्षेत्रों में शोध-कार्यों के लिए कुशल बनाना ।
5) समकालीन मुद्दों के प्रति उन्हे जागरूक और संवेदनशील बनाना ।

संकाय सदस्य : एक परिचय

प्रो.(डॉ) राम लखन मीना, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, **शिक्षा :** पी एच.डी.भाषाविज्ञान, एम.फिल.भाषाविज्ञान (स्वर्णपदक), एम.ए. हिन्दी,एम.ए. भाषाविज्ञान (स्वर्णपदक) **अध्ययन-क्षेत्र :** भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, रूपान्तरण प्रजनक व्याकरण, बोली-भूगोल अनुवाद-अध्ययन, मशीनी अनुवाद, प्रयोजनमूलक हिन्दी, मीडिया एवं साहित्यिक विश्लेषण **शैक्षणिक एवं रिसर्च अनुभव :** 15 वर्ष (केंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, आगरा एवं दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

डॉ. एन. लक्ष्मी अय्यर,एसोसिएट प्रोफेसर,**शिक्षा :** एम.ए., एम.–फिल, बीएड., पी-एच.डी., पीजीडीएफएचटी एम. फिल., **अध्ययन-क्षेत्र :** तुलनात्मक साहित्य. **शैक्षणिक एवं रिसर्च अनुभव :** 13 वर्ष, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,चैन्नई

डॉ. ममता खांडल,सहायक प्रोफेसर,**शिक्षा :** एम.ए.(हिन्दी), नेट , पी-एच.डी.,अनुवाद में पीजी डिप्लोमा **अध्ययन-क्षेत्र :** आधुनिक कविता उत्तर आधुनिकता तुलनात्मक साहित्य, **शैक्षणिक अनुभव** :12 वर्ष

डॉ. सुरेश सिंह राठौड़, सहायक प्रोफेसर, **शिक्षा :** एम.ए.(हिन्दी),एम.ए. संस्कृत , एम.फिल., स्लेट , पीएच-डी. **अध्ययन-क्षेत्र :**लोक साहित्य, कथा साहित्य, **शैक्षणिक अनुभव :** 11 वर्ष , राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान , नयी दिल्ली

डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह,सहायक प्रोफेसर, **शिक्षा :** एम.ए.(हिन्दी), एम.ए. भाषाविज्ञान, नेट, पीएच-डी, पीजीडीएनएलटी, **अध्ययन-क्षेत्र :** भाषाविज्ञान, भाषा प्रोद्योगिकी, साहित्यिक आलोचना. **रिसर्च अनुभव :** 08 वर्ष , भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

डॉ. संदीप विश्वनाथराव रणभिरकर, सहायक प्रोफेसर, **शिक्षा :** एम.ए.हिन्दी (स्वर्णपदक), एम.फिल, पी-एच.डी, नेट. **अध्ययन-क्षेत्र :** भक्ति साहित्य, आधुनिक हिन्दी साहित्य,स्त्री विमर्श. **शैक्षणिक अनुभव :** 08 वर्ष,लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,धर्माबाद, महाराष्ट्र

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

MAH 101	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)
MAH 102	हिंदी भाषा का स्वरूप एवं इतिहास
MAH 103	प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य
MAH 104	जनसंचार और पत्रकारिता : एक परिचय
MAH 105	कंप्यूटर परिचय तथा शब्द संसाधन

MAH 106	तुलनात्मक साहित्य सिद्धांत और प्रविधि (वैकल्पिक)
MAH 106	भारतीय उपन्यास (वैकल्पिक)
MAH 201	आधुनिक हिंदी कविता
MAH 202	हिंदी कहानी
MAH 203	हिंदी उपन्यास
MAH 204	रेडियो एवं टी. वी. पत्रकारिता
MAH 205	अनुवाद सिद्धांत व् व्यवहार
MAH 206	जनसंपर्क, सरकारी सूचना व विज्ञापन (वैकल्पिक)
MAH 206	आधुनिक भारतीय कविता (वैकल्पिक)
MAH 301	हिंदी साहित्य का इतिहास
MAH 302	हिंदी आलोचना
MAH 303	भारतीय एवं पाश्चत्य साहित्य चिंतन
MAH 304	राजस्थांनी लोक संस्कृति एवं साहित्य
MAH 305	वेब डिज़ाइन, पेज मेकर, साउंड एवं वीडियो संपादन
MAH 306	वैकल्पिक – विशेष अध्ययन : कबीर / मीरा / निराला / प्रेमचंद (इनमें से कोई एक)
MAH 401	हिंदी नाटक और रंगमंच
MAH 402	हिंदी के अन्य गद्य रूप
MAH 403	हिंदी साहित्य और सिनेमा
MAH 404	वेब पत्रकारिता
MAH 405	अनुवाद अभ्यास
MAH 406	साहित्य और अन्य कला रूप (वैकल्पिक)
MAH 406	पटकथा लेखन और फिल्म निर्माण (वैकल्पिक)

विभाग मे आयोजित अतिथि व्याख्यान

- प्रो. एलिसन बुश, कोलम्बिया विश्वविद्यालय
- डॉ. इमरे बंघा, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
- डॉ. श्याम सखा श्याम, निदेशक हरियाणा साहित्य अकादमी
- डॉ. संदीप अवस्थी, पत्रकार

- श्रीमती शिप्रा माथुर, पत्रकार
- श्री रवीन्द्र कात्यायन, फिल्म समीक्षक एवं पटकथा लेखक
- डॉ. मधु धवन
- डॉ. नीरू प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, सी.एम.एस. विभाग, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
- डॉ. शंकरलाल पुरोहित, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त
- श्री हरिराम मीणा, पूर्व आई.पी.एस. एवं बिहारी सम्मान
- डॉ. धर्मपाल सिंह सहायक प्रोफेसर, पर्यावरण अध्ययन विभाग, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
- डॉ. सुधीर सोनी , असोसिएट प्रोफेसर , राजस्थान विश्वविद्यालय
- डॉ. पद्म श्री , चन्द्र प्रकाश देवल

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठियाँ

- "भारतीय सिनेमा में सांस्कृतिक मूल्य : हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
- भाषा प्रौद्योगिकी की सात दिवसीय प्रशिक्षण राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 6 से 12 मार्च 2014 तक किया गया, जिसमें भाषा प्रौद्योगिकी की मूल अवधारणा, प्राकृतिक भाषा संसाधन, कॉर्पोरा की संकल्पना, रूपिमिक विश्लेषण, कॉर्पस अवधारणा विकास और चुनौतियाँ, टैगिंग, मशीनी अनुवाद संकल्पना और अनुप्रयोग, यूनीकोड, स्पेल चेकर : संकल्पना और विकास इत्यादि को शामिल किया गया है । हिंदी की वर्तमान ताकत उसका प्रयोजनमूलक पक्ष है जिसने हिंदी को रोजगारोन्मुख बना दिया। प्रयोजनमूलक हिंदी में शामिल घटकों में प्रमुख है; मीडिया के विविध आयाम, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, अनुवाद के विविध आयाम, सृजनात्मक लेखन, भाषा की प्रयुक्तिपरक अनुप्रयोग और राजभाषा से जुड़े विभिन्न पहलू। इस सबके लिये दरअसल हिंदी को तकनीकी रूप से समृद्ध बनाने की महती आवश्यकता है ।

हमारे छात्र : हमारा गौरव : छात्रों की उपलब्धियों में 05 जे आर एफ.,17 नेट- 6 उत्तीर्ण कर चुके हैं और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक, खेल एवं अन्य गतिविधियोंमें भाग लिया तथा कई पुरस्कार प्राप्त किए । विवरण निम्नलिखित है -

सौम्य परमार (जे.आर.एफ:2012-13), हरसहाय शर्मा (जे.आर.एफ:2012-13/ नेट-2013-14) ओंकारमल दुधवाल (नेट:2012-13/ जे.आर.एफ:2013-14), दिनेश कुमार (नेट:2012-13), यादवेन्द्र चेजारा (नेट:2012-13, 2013-14), नीलम सेन (नेट:2012-13), वीरेंद्र सिंह बारेठ (नेट:2012-13,2013-14) सुमित कुमार मीणा (जे.आर.एफ:2013-14), दिनेश कुमार (जे.आर.एफ:2013-14), संदीप कुमार (नेट:2013-14), दिनेश चन्द्र सारस्वा (नेट :2013-14), निक्की कुमारी (नेट :2013-14) ।

ओंकारमल दुधवाल - राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्ययनरत रहते हुए प्रथम प्रयास में नेट तथा दूसरे प्रयास में जे.आर.एफ़ की परीक्षा उतीर्ण करना गौरव की बात है । यहाँ का पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी तथा समसामयिक विषयों को केंद्र में रखकर बनाया गया है । जिसके कारण हिंदी के छात्र भी विभिन्न क्षेत्रों में अपना रोजगार तलाश सकतें हैं । यहाँ से एम.ए. करते ही एन.जी.ओ. में नौकरी मिल गई, परन्तु यहीं से पढने की लालसा के कारण

अब पीएच-डी. भी यहीं से कर रहा हूँ।

सुमित कुमार मीना - मैं पी-एच. डी. का छात्र हूँ, एम.ए. भी यहीं से किया है। यहाँ के प्राध्यापकों के उचित मार्गदर्शन,निरंतर होने वाले अतिथि व्याख्यानों, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रम के कारण एम.ए. में अध्यनरत रहते हुए ही जे.आर.एफ़ की परीक्षा उतीर्ण की।

नीलम सेन – मैंने राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से सत्र 2011-13 में एम.ए. किया। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से एम.फिल. कर रही हूँ। राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अध्ययन के वर्ष काफी महत्तवपूर्ण रहे। यहाँ का पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी है जो हमारे भविष्य को ध्यान में रख कर बनाया गया है। साथ ही, उक्त पाठ्यक्रम यू जी सी नेट / जे.आर.एफ़, सिविल सेवा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के सिलेबस को आधार बना कर तैयार किया गया है जो नेट आदि के लिए उपयोगी है यही कारण है कि एम.ए. के अध्ययन के दौरान ही नेट उत्तीर्ण हो गया।

दिनेश कुमार चारण- मैं राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में चतुर्थ सत्रांश में अध्ययनरत हूँ। प्रथम सत्रांश में नेट और दूसरे सत्रांस में जे.आर.एफ़. की परीक्षा उतीर्ण की है। यहाँ का सुसज्जित पुस्तकालय, तथा शैक्षणिक वातावरण अध्ययन के लिए स्वतः ही प्रेरित करता है। समय समय पर होने वाली संगोष्ठियाँ,अतिथि व्याख्यान तथा रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम हमारे लिए बहुत अधिक उपयोगी होते हैं।

दिनेश चन्द्र सरस्वा – एम.ए.हिंदी का पाठ्यक्रम हमारे लिए भविष्य की नई संभावनाएं पैदा करता है, जिसमें सिनेमा, रेडियो,टेलीविजन, पत्रकारिता,इंटरनेटपत्रकारिता,तुलनात्मक अध्ययन, अनुवाद अभ्यास व कंप्यूटर विषय का विशेष रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शामिल है। साथ ही, नियमित कक्षाएँ,नेट जैसी प्रतियोगी परीक्षायों की विशेष कक्षाओं के कारण ही प्रथम प्रयास में नेट की परीक्षा उतीर्ण की।

संदीप कुमार- – मैं राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में चतुर्थ सत्रांश में अध्ययनरत हूँ। यहाँ का पाठ्यक्रम मीडिया,पटकथा लेखन, वेब पत्रकारिता के क्षेत्रों हेतु भी उपयोगी है। साथ ही, राज्य तथा केन्द्रीय स्तरीय प्रतियोगिता परीक्षायों के लिए बहुत उपयोगी है। निरंतर नेट की अतिरिक्त कक्षाएँ ही मेरे नेट का आधार बनी इसी कारण द्वितीय प्रयास में मैंने नेट की परीक्षा उतीर्ण की।

निक्की कुमारी- मैं राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के चतुर्थ सत्रांश में अध्ययनरत हूँ। यहाँ अध्ययन करते हुए मैंने जो लाभ प्राप्त किया वो अन्य विश्वविद्यालयों से संभव नहीं है। यहाँ के अध्ययन का ही परिणाम है कि मैंने द्वितीय प्रयास में ही नेट की परीक्षा पास की। प्रयोजनमूलक हिंदी तथा साहित्य का पाठ्यक्रम हमारे सुनहरे भविष्य के लिए उपयोगी साबित होगा।

छात्रों की संगोष्ठियों में सहभागिता

- **छात्र प्रवेश :** वर्तमान अकादमिक सत्र 2013-14 में एम. ए. हिन्दी के प्रथम सत्र में 27 विद्यार्थी, तृतीय सत्र में 19 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं । पीएच-डी. वर्तमान में 09 विद्यार्थी शोधरत है। आगामी अकादमिक सत्र 2014-15 में 15 शोधकर्ताओं का पंजीकरण किया जाएगा। विभाग के छात्रों द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर , लोहिया कालेज, चूरू , सोना देवी सेठिया कन्या महाविद्यालय, सुजानगढ़ , कनोड़िया महाविद्यालय, जयपुर , मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड , लखनऊ केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ आदि में आयोजित सेमिनारो में पत्र-वाचन किया .
- **इंटर्नशिप:** हिन्दी विभाग में अध्ययनरत अकादमिक सत्र 2011-12 के छात्रों ने विभिन्न समाचार पत्रों/ कार्यालयों में इंटर्नशिप प्रशिक्षण प्राप्त किया। विवरण निम्नलिखित है –

ग्रीष्म-कालीन प्रशिक्षण

नाम	संस्था	स्थान
अनिल प्रजापत	दैनिक भास्कर	किशनगढ़
दिनेश चन्द्र सरस्वा	संघर्ष संस्थान	दुदू
संदीप कुमार मीणा	थिंकर्स कम्युनिकेशन	जयपुर
भगवान सहाय शर्मा	संघर्ष संस्थान	दुदू
सुरेश कुमार सैनी	कार्यालय सहायक निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग	सीकर
दशरथ वैष्णव	दैनिक भास्कर	किशनगढ़
रामफूल मीणा	कार्यालय सहायक निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग	टोंक
सुमित्राकुमारी बुरानिया	रिलायबल इंडिया	सीकर
निक्की कुमारी	रिलायबल इंडिया	सीकर
सुनील कुमार मीणा	स्वामी विवेकानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय	केलवाडा
सुमेर सिंह रावल	दैनिक भास्कर	किशनगढ़
नम्रता पंवार	दैनिक नव ज्योति	किशनगढ़
सपना यादव	दैनिक नव ज्योति	किशनगढ़
जीतेश कुमार शर्मा	नवयुवक संदेश साप्ताहिक	भरतपुर
दीप्ति शर्मा	राजस्थान ग्रामीण विकास चेतना परिषद् (NGO)	जयपुर

पूर्व छात्र परिषद् : विभाग में अध्ययनरत/ पूर्व छात्रों की एक छात्र-परिषद का गठन किया जाय जिससे छात्र आपस में एक दूसरे के संपर्क में रहकर विभाग की गतिविधियों एवं विकास में भागीदार बन सकें। परिषद की एक बैठक दिनांक को आयोजित की गयी जिसमें निर्णय लिया गया कि आगामी बैठक में परिषद की कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा